गांधी-मार्ग

मई-जून 2025

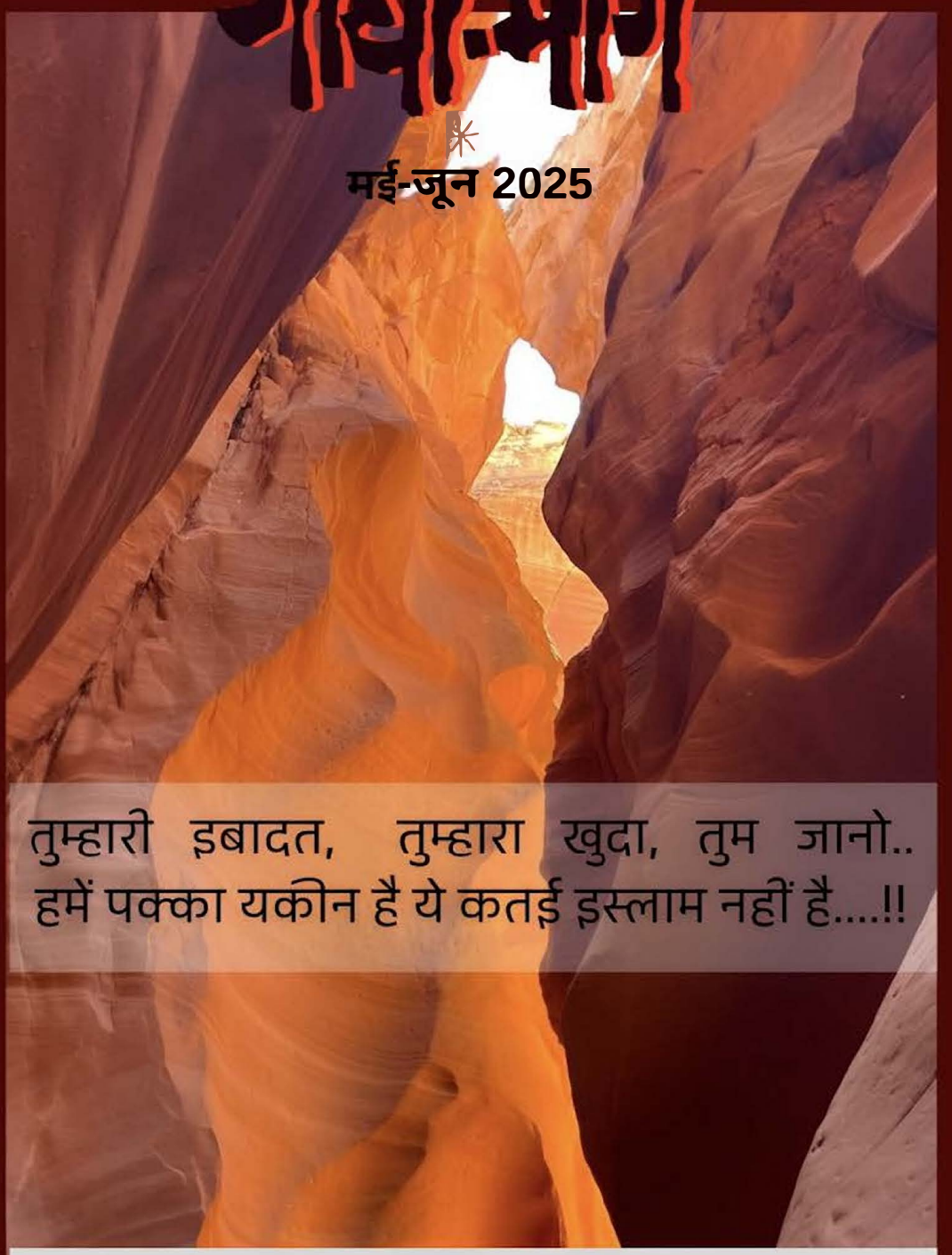

तुम्हारी इबादत, तुम्हारा खुदा, तुम जानो..
हमें पक्का यकीन है ये कतई इस्लाम नहीं है.....!!

० महात्मा गांधी ० जयप्रकाश नारायण ० कंसतान्ति पाउस्तोवस्की ० नीलाभ पंडित ० कुमार प्रशांत

गांधी इतिहास नहीं
वर्तमान और भविष्य भी हैं...

वर्तमान को समझिए... भविष्य को बनाइए!

*

गांधी शांति प्रतिष्ठान से जुड़िए.

हमारे केंद्र :

०भागलपुर ०जोधपुर ०पटना ०भुवनेश्वर ०जमशेदपुर ०जम्मू
०मुजफ्फरपुर ०इंदौर ०कौसानी ०कानपुर ०भद्रक ०राउरकेला
०बैंगलूरू ०धारवाड़ ०कोचिन ०कालिकट ०त्रिवेंद्रम ०त्रिशूर
०अहमदाबाद.

गांधी-मार्ग

अहिंसा-संस्कृति का द्वैमासिक
वर्ष 67, अंक 3, मई-जून 2025

गांधी शांति प्रतिष्ठान

1. शुरू में...		3
2. दस्तावेज : भ्रातृत्व	महात्मा गांधी	7
3. रोशनदान :		8
4. अनुभूति : अपनापन!	कंसतान्ति पाउस्तोवस्की	13
5. सोचो-समझो : एक बहस के बहाने		15
6. आईना : जयप्रकाश ने कहा...		22
7. रंगमंच : हे राम!		32
8. टिप्पणियां :		59
9. पत्र		64

आवरण : यह रंगों की छटा नहीं, न आग की लपटें हैं; यह पत्थरों का वह संगीत है जो कोई 225 मीलियन (22.5 करोड़) वर्ष पहले रहस्यमयी प्रकृति ने रचा. अमरीका के नेवाडा शहर के पूर्वी छोर से पत्थरों का यह बहुरंगी संसार शुरू होता है– ग्रैंड कैनियन; जो तब के जंगलों, वृक्षों के फॉसिल्स को अनोखा रूपाकार देता है. हमारी सुपरिचित लेखिका **प्रेरणाजी** ने हाल-फिलहाल के अमरीका प्रवास के दिनों में यह फोटो खींचा. हमें लगा कि धर्मों के संगठन की सारी परिकल्पना भी फॉसिल्स में बदलती जा रही है जिसने मेरे मरहूम दोस्त **निदा फाजली** को यह लिखने पर मजबूर किया : **तुम्हारी इबादत, तुम्हारा खुदा, तुम जानो/ हमें पक्का यकीन है ये कतई इस्लाम नहीं है.** आवरण सज्जा हमेशा की तरह **कीर्ति** ने की है.

वार्षिक शुल्क : भारत में 200 रुपये, दो वर्ष के 350 रुपये, आजीवन-1000 रुपये (व्यक्तिगत), 2000 रुपये (संस्थागत), एक प्रति का मूल्य 20 रुपये, डाक खर्च निःशुल्क. दो माह तक न मिलने पर शिकायत लिखें. अपना शुल्क चेक, बैंक ड्राफ्ट, मनीऑर्डर द्वारा 'गांधी शांति प्रतिष्ठान' के नाम भेजें. ऑनलाइन भुगतान के लिए केनरा बैंक खाता नं. 0158101030392 IFSC CODE : CNRB0000158.

संपादन : कुमार प्रशांत **प्रबंध :** मनोज कुमार झा **प्रसार :** भगवान सिंह

गांधी शांति प्रतिष्ठान, 223 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 के लिए अशोक कुमार द्वारा प्रकाशित

फोन : 011-2323 7491, 2323 7493, **Email:** gmhindi@gmail.com

मुद्रक : नीता प्रेस, 3574- गली जटवारा, नियर सबलोक क्लीनिक, दरियागंज, दिल्ली-110002, फोन नं. 8800646548

शुरू में...

वह कहावत है न : हाथ के तोते उड़ जाना, वह ऐसे ही वक्त के लिए बनी है. उन सभी जंगबाजों के हाथ के तोते उड़ गए हैं जो पिछले तीन दिनों से प्रधानमंत्री को ललकार रहे थे कि बस, अब रुकना नहीं है, इस्लामाबाद व लाहौर जेब में लेकर ही लौटना है- "बस, देखिएगा मोदीजी, अब पीओके जैसा कोई क्षेत्र नक्शे पर बचना नहीं चाहिए." लेकिन ऐसे सारे शोर धरे रह गए और तीन दिनों में पाकिस्तान के साथ हमारा अब तक का सबसे छोटा युद्ध समाप्त हो गया.

कोई भी युद्ध समाप्त हो और शांति किसी भी रास्ते लौटे तो मेरे जैसा आदमी उसका हर हाल में स्वागत ही करेगा. शांति शर्त नहीं, जीवन है. लेकिन नहीं, यहां मुझे यह भी कह देना चाहिए कि ऑपरेशन सिंदूर (इस नाम से मुझे वितृष्णा होती है लेकिन यही नाम चलाया गया है!) जिस रास्ते विराम तक आया है, उससे मुझे आशंका हो रही है कि यह शांति किसी बाज के चंगुल में दबी हुई है. होंगे अमरीका के वर्तमान राष्ट्रपति डोनल्ड ट्रंप किसी के परम मित्र लेकिन शांति के लिए उनकी मध्यस्थता युद्ध से कम खतरनाक नहीं है. यदि प्रधानमंत्री का यह कहना सच है कि यह शांति अमरीका की मध्यस्थता से नहीं, भयाक्रांत पाकिस्तान व विजयश्री को वरण करने वाले हिंदुस्तान की समझदारी से आई है, तो ट्रंप महाशय के इस काइयांपन को कठोरता से बरजना नहीं चाहिए क्या कि उन्होंने सबसे पहले, किसी से भी पहले ट्विट कर मध्यस्थता का दावा भी कर दिया, समझदारी दिखाने के लिए दोनों 'बच्चों' की पीठ भी थपथपा दी, दोनों को साथ बिठा कर 'सॉरी' कहने के लिए 'तटस्थ स्थान' भी बता दिया और इस विवाद से बाहर आने में मार्गदर्शक बनने की पेशकश भी कर दी? इतना ही नहीं, यह भी कह दिया कि मेरे कहने से 'आत्मसमर्पण' नहीं करोगे तो मैं धंधा-पानी बंद कर दूंगा. यह सब किसी के हवाले से नहीं, सीधे ट्रंप महाशय के श्रीमुख से हमने भी सुना, मोदीजी ने भी सुना और सारी दुनिया ने सुना. उनके इस काइंयापने को बरजना तो दूर, न भारत ने, न पाकिस्तान ने 'मित्र ट्रंप' से ऐसा कुछ भी कहा; बल्कि पाकिस्तान ने तो उनका सार्वजनिक तौर पर आभार भी माना. अंतरराष्ट्रीय राजनीति के इस दौर में अमरीका व ट्रंप का यह रवैया अत्यंत खतरनाक है. इसकी गहरी और गहन छानबीन होनी चाहिए. लेकिन अभी हम खुद को तो देखें, फिर ट्रंप महाशय की बात करते हैं.

पहलगाम में पाकिस्तान ने जो अमानवीय कारनामा किया, उसके बाद किसी भी सरकार के लिए चुप बैठना संभव नहीं था. आजादी के बाद से अब तक पाकिस्तान